IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'प†चतन्त्र' के पात्रों का 'मानव आचरण' पर प्रभाव

चन्दन कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर–बी0एड0 विभाग
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी

संसार के कथा साहित्य में भारतीय कथा साहित्य को उत्कृष्ट माना जाता है। भारतीय कथा साहित्य को संसार के कथा साहित्य का जनक भी बताया जाता है। ज्यादातर का इन कथाओं में व्यक्ति का नाम न रखकर प्रतीक के रूप में जलीय व आकाशीय पशु–पक्षियों को रखा गया है। ये पशु पक्षी हमें ज्ञानप्रद, नीतिप्रद व आचार–विचार की शिक्षा प्रदान करते हैं। इससे साहित्य प्रेमियों को हास–परिहास छल–कपट, न्याय–अन्याय, सही–गलत, नैतिक–अनैतिक, धर्म–अधर्म की जानकारी व व्यावहारिक ज्ञान की प्राति होती है। 'प†चतन्त्र' एक नीति कथा है। संस्कृत साहित्य के इस ग्रन्थ के रचनाकार विष्णु शर्मा हैं। 'प†चतन्त्र' के पाँच तन्त्र या विभाग हैं। विभागों को तन्त्र का नाम इस कारण दिया गया है कि इसमें नैतिकतापूर्ण शासन की विधियाँ बताई गयी हैं। प†चतन्त्र के तन्त्र है–'मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति (मित्रलाभ), कोकोलूकीयम् (सन्धिविग्रह), लब्धप्रणाश व अपरीक्षितकारक।'

शोध पत्र में शोधार्थी ने प†चतन्त्र' में निहित आचरण संबंधी विचारों का अध्ययन किया है। शोध का शीर्षक प†चतन्त्र के पात्रों का मानव–आचरण पर प्रभाव है। इसमें द्वितीयक स्रोतों को प्रयोग में लाया गया है।

मानव के सर्वांगीण विकास में उसके आचरण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। उसका आचरण उसको समाज में परिवार में प्रतिष्ठा दिलाता है। हिन्दी शब्दकोश में आचरण का अर्थ बताया गया है '(सं.पु.) 1. व्यवहार, आचार, चर्या, कार्यकलाप 2. चरित्र 3. चाल 4. नियम 5. शुद्धि।'[1] सदाचारी व्यक्ति सभी को प्रिय होता है। सदाचारी व्यक्ति सत्य, अहिंसा, प्रेम, कर्तव्यनिष्ठ, भाईचारे जैसे गुणों से युक्त होता है। हम सभी को सदाचारी होना चाहिए। लोभ, मोह, ईर्ष्या द्वेष, निंदा जैसे भाव नहीं रखने चाहिए। कमजोर जनों की मदद, माता, पिता व गुरु का आज्ञापालक होना चाहिए। हमें दूसरों से संवाद स्थापित करते समय भाषा में मधुरता रखनी चाहिए। जीवनपर्यन्त सदाचारी रहने वाले व्यक्ति सदैव सम्मान का पात्र होता है।

विष्णुशर्मा ने 'प†चतन्त्र' की कथा 'कीलोत्पाटिवानर' में 'दमनक' और 'करकट' के माध्यम से अच्छे आचरण की शिक्षा मिलती है–

यथा – यस्य हि यो भावस्तेन तेन समाचरन्।

अनुप्रनिवय मेधवी क्षिप्रमात्मवशं नयेत।।[2]

अर्थात्– इस प्रकार करकट की बातों को सुनकर दमनक ने कहा–यद्यपि यह बात सत्य है कि शासकों की सेवा कर सकना बड़ा दुष्कर है, तथापि जिन–जिन पुरुषों की जैसी–जैसी रुचि, इच्छा, अभिप्राय व प्रवृत्ति होती है। उसी के अनुसार आचरण करता हुआ बुद्धि से युक्त पुरुष उनमें प्रवेश कर जल्दी ही उनको अपने वंश में कर लेता है। भावार्थ – जो जिस तरीके से प्रसन्न होता है, उसको उसी तरीके से प्रसन्न किया जा सकता है।

यथा – भर्त्तुश्चितानुववर्तित्वं सुवृतं चाऽनुजीविनाम्।

राक्षसाश्चाऽपि गृहयन्ते नित्यं छन्दाऽनुवर्तिभिः।।[3]

अर्थात्– स्वामी के मनोनुकूल कार्य करता सेवक का सबसे बड़ा गुण है। इससे स्वामी को वश में किया जा सकता है राक्षसों को भी उनके मन के अनुकूल आचरण कर वश में किया जा सकता है, मनुष्यों की क्या बिसात है ?

विष्णु शर्मा की कृति 'प†चतन्त्र' में आचरण के प्रभाव का उल्लेख वाचालराक्षस कथा में 'मकर और वानर के माध्यम से किया गया है।

यथा – भार्या दुष्टचरित्रा, सततं कलहप्रिया।

भार्यारूपेण सा ज्ञेया विदग्धैर्दारूणा जरा।।[4]

अर्थात् – जो नारी दुष्ट स्वभाव और आचरण की हो और हमेशा झगड़ा करने वाली हो नारी नहीं है, किन्तु नारी रूप में वह जरा (शरीर को नष्ट करने वाली, जलाने वाली जरा, बुढ़ापा) ही है।

यथा– तस्मात्सर्वप्रयत्नेन नामाऽपि परिवर्जयेत्

स्त्रीणामहि हि सर्वासां य इच्छेत्सुखमात्मनः।।[5]

अर्थात् – स्त्रियाँ प्रायः कलहकारिणी व दुष्ट आचरण की ही होती हैं, अतः अपना सुख चाहे तो, सब प्रयत्न से (सर्वथा) सभी स्त्रियों का नाम भी कभी ना ले, स्त्रियों से हमेशा दूर ही रहें।

यथा– यदन्तस्तन्न जिह्वायां यज्जिह्वायां न तद्घहिः।

यद्धहिस्तन्न कुर्वन्ति, विचित्रचरिताः स्त्रियः।।[6]

अर्थात् जो स्त्रियों के मन के भीतर बात होती है, वह उनकी जिह्वा पर ही नहीं है जो बात जिह्वा पर है, वह बाहर नहीं है और जो प्रकट करेगी उसको वह करती नहीं है। अतः स्त्रियाँ विचित्र स्वभाव व आचरण वाली होती है। अर्थात् स्त्रियों के भीतर कुछ है और बाहर कुछ। कहती कुछ हैं और करती कुछ हैं अतः स्त्रियों की माया जटिल है, अगम्य है।

प†चतन्त्र में आचरण पर प्रभाव को पद्यनिधि 'क्षपणक– धर्माधिकारिकाणां' कथा में मणिकमद् सेठ द्वारा कहलाया गया है –

यथा– लघुरयमाह न लोकः कार्य गर्जन्तमपि पति पयसाम।

सर्वनलज्जा करमिह यद्यत्कुर्वन्ति परिपूर्णाः[7],,

अर्थात् धनी लोग अनुचित आचरण भी करें तो भी जगत में उन्हें कोई बुरा नहीं कहता। जैसे जल से परिपूर्ण और गरजते हुए समुद्र या बादल की जगत में कोई निंदा नहीं करता है, क्योंकि वे परिपूर्ण हैं। अतः बुरा कर्म करने पर भी लोग उनको बुरा नहीं कहते हैं।

हमारा देश कथाओं का देश है। देश में बच्चे बूढ़े सभी लगन से मन्त्रमुग्ध होकर कहानियों को सुनते हैं। राजा–रानी की कहानियों के साथ तोता मैना वाली कहानी भी यहाँ सुनी जाती है। यह मनोरंजन के साथ–साथ उपदेशात्मक भी होती है। यह कहानी पद्य और गद्य दोनों में सुनाई जाती है और सुनने वाला हाँ की हुँकार भी भरता है। प†चतन्त्र में के पात्रों के माध्यम से मानव आचरण के बारे में बताया गया है। गाँवों में प्रचलित ये कहानियाँ लोकप्रिय हैं और ये अपना जनमानस पर प्रभाव भी डालती हैं।

इन कहानियों का प्रभाव जनमानस पर भी पड़ा। यह विचार आज सद्विचार नहीं कहे जा सकते। यह पूर्वाग्रह दिखाते हैं। इन विचारों ने नारी के संदर्भ में, आमजन के संदर्भ में लोगों में गलत धारणाओं को निर्मित करने में सहायता प्रदान की।

संदर्भ–ग्रन्थ

[1] hindi2dictionary .com देखा गया 2012.20

[2] प†चतन्त्र। मित्रभेदः पृ. 44 श्लोक 74

[3] प†चतन्त्र 1 मित्रभेदः, पृ. 44 श्लोक 75

[4] प†चतन्त्र 4 लब्धप्रणाशम्ः, पृ. 860, श्लोक 41

[5] प†चतन्त्र 4 लब्धप्रणाशम्ः, पृ. 830, श्लोक 42

[6] प†चतन्त्र 4 लब्धप्रणाशम्ः, पृ. 830, श्लोक 43

[7] प†चतन्त्र 5 अपरीक्षितकारकम्ः, पृ. 866, श्लोक 10